Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 2, Issue - 5, Sept-Oct – 2019
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 1.847
Received on : 05/09/2019 Accepted on : 21/09/2019 Publication Date: 30/09/2019

Mk- रमेशचंद्र महरोत्रा के प्रेरक निबंधों और चिंतन साहित्य का अध्ययन

[1] **अमित कुमार पटेल,** [2] **Mk- सुधीर शर्मा**
[1] शोधार्थी, [2] शोध–निर्देशक
[1] हिन्दी विभाग, [2] विभागाध्यक्ष हिन्दी
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर, जिला दुर्ग ¼N-x-½

सारांश *: प्रस्तुत शोध प्रबंध में रमेशचंद्र महरोत्रा की साहित्यिक अवदान के अंतर्गत उनके साहित्यिक कृतियों का विस्तृत विवेचना की गई है। उन्होंने अपने साहित्य में समाज में फैली बुराईयों के प्रति लोगों को सचेत किया है। उन्होनें समाज की हर छोटी–बड़ी अव्यवस्था के लिए समाज की मानसिक सोंच एवं रुढ़िवादी परंपरा को जिम्मेदार ठहराया है। रमेशचंद्र महरोत्रा एक संवेदनशील साहित्यकार की तरह समाज को अपने नजरिये से देखकर उसे अपने अंदाज में व्यक्त किया है। उनके साहित्यिक रचना अपने आप में अदभुत है, यह मानव को अपने भीतर झांकने के लिए स्वतः प्रेरित करती है। दैनिक जीवन से संबंधित समस्त समस्याओं का समाधान प्रस्तुत है। उनके रचनाओं में नवीनतम एवं मौलिकता के साथ–साथ उनकी महानता एवं समाज के प्रति उनका प्रेम का बोध कराती है। उन्होंने साहित्य के माध्यम से समाज को आइना दिखाने का काम किया है।*

मुख्य बिन्दू: *रमेशचंद्र महरोत्रा, साहित्यिक कृतियों, नवीनता एवं मौलिकता, विचारधारा का प्रभाव, प्रेरणात्मक निबंध*

प्रस्तावना:

रमेशचंद्र महरोत्रा के साहित्यिक रचनाओं में नवीनता एवं मौलिकता के साथ–साथ उपयोगी एवं विचारणीय है । जब श्रोता या पाठक साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन करता है, तो उनकी विद्वता का कायल हो जाता है । उनकी रचनाओं में समाज की दुखती रगों को छूने की महाचेष्ठा झलकती है । इनकी रचना का उददेश्य समाज के उच्चतर मानवीय मूल्यों के प्रति सावधान करना है । समाज में फैली बुराईयों के प्रति लोगों को जागरुक करना है, कि मनुष्य कैसे हिंस्र, असभ्य, स्वार्थी , लोभी और भोगवादी होता जा रहा है । उसके सभी मूल्य कैसे ध्वस्त होते जा रहे है । कैसे समाज के चारो तरफ धन की सत्ता, पाशविकता का प्रभुत्व और कुटिलता का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। डॉ. महरोत्रा जी की साहित्यिक रचनाएँ अच्छा बनने के लिए एवं बुराइयों से बचने के लिए मार्गदर्शित करती है। उनके कई साहित्यिक रचनाएँ हैं, जो एक से बढ़कर एक है, जिनमें से कुछ प्रमुख साहित्यिक रचनाएँ आड़ी–टेड़ी बात, सफलता का रहस्य एवं सुख की राहें, आदि हैं।

शोध उद्देश्य %

1. राष्ट्रीय एवं सामाजिक परिवेश में डॉ. महरोत्रा की विचारधारा का प्रभाव लक्षित करना ।
2. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में साहित्य की कल्याण की भावना तथा इसमें डॉ. महरोत्रा के विचारधारा की आवश्यकता, उपयोगिता, एवं महत्व ।
3. डॉ. महरोत्रा की रचनाओं एवं निबंधों में नवीनता एवं मौलिकता के अतिरिक्त समाज उपयोगिता का मूल्यांकन ।

शोध प्रविधि %

प्रस्तुत शोध–कार्य में निम्नलिखित अनुसंधान प्रविधियों का प्रयोग किया गया है :–

1. ग्रंथालयों में उपलब्ध ग्रंथों, शोध–ग्रंथों, एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री का अन्वेषण ।
2. वेबसाईट, ब्लाग एवं समाचार पत्रों इत्यादि में उपलब्ध संबंधित सामग्री का अन्वेषण ।
3. डॉ. महरोत्रा के प्रमुख रचनाओं में प्रेरणात्मक निबंधों की पड़ताल की गई ।

lkfgR; e ij.kkRed lkr % डॉ. महरोत्रा जी ने आड़ी–टेढ़ी बात में समाज, जीवन, शिक्षा आदि के क्षेत्रों में यथार्थ को व्यंग्य के माध्यम से व्यक्त किये हैं । लेखक की दृष्टि इतनी पैनी है कि पूरी व्यवस्था से उभरते भोगे यथार्थ को दर्शाया गया है जो पाठक के सीधे मन में उतर जातें हैं । इस पुस्तक में अंकित व्यंग्य जो समाज के कुचक्रों और कुत्सित दुर्भावनाओं की पोल खोल रही है । यह एक सार्थक और सजीव कृति है । आड़ी–टेढ़ी बात समाज के लिए दर्पण है, कहते हैं जब सीधी उँगली से घी नही निकलता तो उसे टेढ़ा करके ही निकालना पड़ता है, लेकिन घी अगर पूरी तरह पिघला हुआ हो तो टेढ़ी उँगली भी उसका क्या निकालेगी । इसी तरह यदि कोई व्यक्ति पूरी तरह से भ्रष्ट है एवं बेइमान

है उसके दिमागों पर चर्बी चढ़ गई हो या स्वार्थ लिप्सा, धूर्तता इत्यादि की मोटी तहें जम गई हो तो सीधी बात से उन पर कोई असर नही होगा । आड़ी–टेढ़ी बात मूलतः निबंधात्मक है । यह पुस्तक हमारे आस–पास की विसंगतियों के प्रति प्रबुद्ध वर्ग को सतर्क करने एवं व्यवस्था को सचेत करने का एक ऐसा अचूक अस्त्र है जिसके प्रहार से आहत होना निश्चित है । किसी की बुराई को जग जाहिर करना अच्छी बात है, पर कितने लोग है जो अपनी बुराई सीधे सुनकर प्रसन्न होतें हैं । आड़ी–टेढ़ी बात ऐसे प्रसंगों को बखूबी कह देती है, जो अन्यथा कठिन है ।

डॉ. महरोत्रा जी के मन में समाज के प्रति सच्चा लगाव है, वे हर छोटी–बड़ी अव्यवस्था से वे दुखित एवं चिंतित है । उनके बहुत ही नेक इरादे हैं, इस आड़ी–टेढ़ी बात पुस्तक में आधे से अधिक रचनाएँ विश्वविद्यालय से संबंधित है । उनकी सूक्ष्म दृष्टि जितनी शिक्षा , शिक्षक, शिक्षार्थी आदि के जड़ो तक पहुँच सकती है, उतनी अन्य पाठक या लेखक की नही हो सकती है । डॉ. महरोत्रा की इस संकलन में शिक्षा के अतिरिक्त जीवन के विभिन्न पहलुओं पर भी दृष्टि अत्यंत सूक्ष्म एवं पैनी है वे अस्पताल, टेलीफोन, पोस्टआफिस, रल्वे, बैंक, राशन की दुकान, नगरनिगम, दूरदर्शन, शासन, प्रशासन धर्म, साहित्य , पुलिस, राजनीति आदि के भ्रष्टाचार उनमें व्याप्त अराजकता और मनमानी को वे इस साहित्य के माध्यम से उजागर किये हैं । ''पुलिस वालों का क्या काम है । तन–मन–धन से खुद अपनी सुरक्षा करना । आप भी अपनी सुरक्षा स्वयं कीजिए, विशेषकर पुलिसवालों से करना । यदि आप ने किसी काम से उनसे संपर्क साधा तो आप आर्थिक और शारीरिक दोनो प्रकार के संकट में पड़ जायेगें। एक लड़के की घड़ी चोरी हो गयी थी, उसने थाने में शिकायत लिखवा दी जब उसे वहा चार छह बार बुलाया गया तो उसने थाना प्रभारी को पचास रूपये देकर यह पीछा छुड़वाया की आगे से उसके यहा कभी चोरी नहीं होगी ।''1

डॉ. महरोत्रा एक ओर सुमन से भी अधिक कोमल है वे इतने कोमल है कि दूसरों के दुःख से वे द्रवित हुए बिना नही रहते और दूसरी ओर वे बज्र से भी अधिक कठोर है, वे इतने कठोर हैं कि वे अपने आप को भी नही बख्शते। उनके इस रचना से प्रतीत होता होता है कि वे समाज के निरंतर गिरते हुए मूल्यों के प्रति करुणार्द्र हो उठतें हैं । और जो व्यक्ति इसके लिए जिम्मेदार या उत्तरदायी होता है उसके प्रति आक्रोशित हो उठते है। जिसका उदाहरण डॉ. महरोत्रा के इस कथन से स्पष्ट होता हैः–''एक कर जल मल कर होता है । इसकी अदायगी के बिना कोई व्यक्ति मकान मालिक नही कहला सकता । यह कर उन माकान मालिको को भी देना पड़ता है जिनके यहॉ के जल और मल का कर वसूलने वालो से दूर का भी संबंध नही होता, क्योकि नगर निगम के नल और नालियॉ उनके माकानों के आस–पास भी कभी नही पहुँचती । कमल का फूल किसे पसंद नही होता नगर में जगह–जगह कीचड़ के पोखर निर्मित होते रहते हैं जिनके विकास में निगम इसलिए बाधा नही डालता की कीचड़ में ही कमल खिलतें हैं । बरना उन बेचारियों का इस देश में कौन है । ''2

डॉ. महरोत्रा ने ऐसी ही समाज एवं रोज के टेढ़े–मेढ़े सवालों को हल करने के लिहाज से इस पुस्तक की रचना की है यह समाज में फैले भ्रष्टाचार एवं भ्रष्ट व्यक्तियों के लिए दर्पण है । इसमें कल्पना का स्थान नही के बराबर है । यह पूर्णतः सत्य प्रतीत होती है । यह दियों के तले अंधेरे को उजागर करती है । तो कही समाज को अपने कर्त्तव्यों और दायित्वों का बोध कराती चलती है । कही वह गलतफहमी के शिकार व्यक्तियों को उनकी असलियत का बोध कराती चलती है । यह रचना लोगों को उनकी सत्यमार्ग पर चलना सिखाती है यह एक ऐसा दर्पण है जिसमें हमारे समाज की सच्ची तस्वीर दिखाई देती है जिसे देखकर एक सच्चे मानव में दया एवं करुणा के भाव जागृत होतें हैं। यह दया और करुणा ही लेखक के लेखनी की छटपटाहट बनकर इस संकलन के रूप में ढल गई है । साहित्य बासी कुछ नही होता, क्योंकि ज्यो–ज्यो समय बीतता जाता है, साहित्य का सत्य और अधिक मूल्यवान और प्रासंगिक होने लगता है ।

डॉ. महरोत्रा जी ने प्रेरणात्मक निबंध सफलता का रहस्य संकलन में जीवन जीने का सही मार्ग क्या है ? एवं अच्छाई की तरफ ले जाने वाले कई निबंध दिए गए है । रचनाएँ जीवन जीने के सिद्धान्तों से अवगत कराती है, कि व्यक्ति का जीवन अपने लिए नही बल्कि परोपकाराय एवं परहिताय है । डॉ. महरोत्रा सफलता के नहीं, बल्कि जीवन की चरितार्थता के ज्वलंत निदर्शन है । व्यक्ति एवं समाज के लिए दपर्ण है यह दिशा निदेशक है । निबंधों में पाठकों को जो आदर्श बताये गये हैं । वह निश्चित रूप से उपयोगी एवं हितकर है । यदि व्यक्ति या पाठक इसका अनुसरण करते है तो वास्वविक में सफलता हाथ लगेगी । जिस प्रकार व्यक्ति जाने और कुछ अनजाने कारणों से भौतिक और मानवीय मूल्यों के बीच बढ़ती दूरी के प्रतिफल को व्यक्तिगत मूल्यों की ओर दुर्लक्ष्य करने की आदत के मध्य मनुष्य को बेहतर आदमी बनने के लिए प्रेरित करने वाली अमूल्य कृति है ।'' लेखक का मानना है कि दान देने वाले आदमी को अपना नाम जरूर आउट करना चाहिए और जितना क्रेडिट उसका ड्यू हो उतना उसे ईमानदारी से मिलना चाहिए कम भी नही और ज्यादा भी नही । यह उसके अच्छे काम के पुरस्कार का तकाजा है । यह भी हो सकता है कि उसका नाम फैलने के कारण कुछ अन्य लोग उसके साथ कार्य विशेष के लिए दान देने को प्रेरित हो जाए । ढोग करने की जरूरत नही है । सही अर्थो में हर प्रबुद्ध व्यक्ति नाम और यश के लिए जीता है । उसे उसके लिए जीना भी चाहिए, क्योकि किसी को नाम और यश तभी मिलता है जब वह समाज के लिए कुछ करता है । सिर्फ अपने लिए करने वाले लोग घोर असामाजिक और सबसे निम्न श्रेणी के प्राणी होतें हैं, वे ही यश के बारे में नही सोच पाते, क्योकि वह उनके कद से बहुत ज्यादा उचाई पर होता है । उसके जीवन का लक्ष्य खा–पीकर मर जाने के अलावा कुछ नही होता ।''3

डॉ. महरोत्रा जी की रचना सफलता के रहस्य से पाठक को समाज के लिए जीवन जीने की प्रेरणा देती है लेखक का मानना है कि यदि व्यक्ति को यश प्राप्त करना है , अमर होना है तो समाज के हित के लिए जीवन को समर्पण करना होगा । स्वार्थ को त्यागना होगा जिस प्रकार पूज्य विभूतियॉ, भगवान गौतम बुद्ध, संत कबीर, स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गांधी आदि ने समाज के लिए अपना जीवन निःस्वार्थ भाव से समर्पित कर सदा के लिए अमर हो जातें हैं ।

डॉ. महरोत्रा के इस संकलन में आत्मावलोकन के विभिन्न पहलुओं को जीवन के सहज प्रसंगों में झाकने का सार्थक प्रयास है । जीवन के भावुक क्षणों, जीवन की कमियों और साधन की कमियों में भी मानवीय चेतना के उत्कर्ष को रेखांकित करते हुए जीवन को गरिमामय ढंग से जीने का संदेश प्रदान करती है । इस संकलन में नवीन उन्मेष और नवीन भावों के संसार में सुख की किरणें उदित हुई है । और यह रचना नई पीढ़ी को नई राह दिखाने का भी लेखक का सफलतम प्रयास है ।

डॉ. महरोत्रा जी का प्रेरणात्मक निबंध सुख की राहें पाठक के लिए जीवन–जय का मार्ग उन्मुक्त करती है । इस पुस्तक में आपकों सफल जीवन एवं आदर्श जीवन व्यतीत करने के सभी मार्ग मिल जायेंगें। यह व्यक्ति एवं समाज के लिए चेतना संस्कार साहित्य है जो व्यक्ति को आइना दिखाने का कार्य बखूबी कर रही है । ''सुख की राहें'' के कुछ निबंध उत्कृष्ट मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करतें हैं। जिन्हे चिंतन के धरातल पर उकेरा गया है । इस संकलन में जीवन के सहज प्रसंगों में झॉकने का सार्थक प्रयास है । जीवन के अभावों और साधनहीनता में भी मानवीय चेतना के उत्कर्ष को रेखांकित करते हुए जीवन को गरिमामय ढंग से जीने का संदेश हमें प्राप्त होता है। इस संकलन के प्रथम अध्याय में स्वार्थ की विविधता और वास्तिवक स्थिति क्या है? इसकी विवेचना किया गया है । इस निबंध में बताया गया है मानव कि इच्छा के विरूद्ध जिस किसी ने कुछ काम किया वह स्वार्थी हो जाता है । लेकिन हम अपने अंदर झॉक कर नही देखते है कि हम क्या है ? हम हमेशा व्यक्ति को अपने ही अनुसार ढालना चाहतें हैं । डॉ. महरोत्रा जी के शब्दों में '' आप अपने को इतना स्वार्थी मत बनाइए की और के स्वार्थो के बारे में बिल्कुल न सोच सके । आप पूरे धैर्य और संतुलन तथा सहिष्णुता के साथ दूसरों के स्वार्थों को वैसे ही सहने की आदत डालिए जैसे आपके स्वार्थों का अन्य बहुत से लोग सहतें हैं । ''4

उपरोक्त कथन से सिद्ध होता है कि स्वार्थी तो सभी है पर व्यक्ति को अपने स्वार्थ के साथ–साथ दूसरों के भी स्वार्थ का ध्यान रखें तो ऐसे स्वार्थी को लोग स्वार्थी नही कहा करतें। इस संकलन में इसी तरह के कई निबंध हैं, जो समाज के लिए दिशा निर्देश देतें हैं । ''असफलताओं को सहज–भाव से ले '' आज का युवा पीढ़ी असफल होने से निराश एवं दुखी हो जाते हैं। कभी–कभी स्थति यहॉ तक हो जाती हैं। कि वे आत्महत्याऍ तक कर लेते हैं। उन्हें ऐंसा प्रतीत होता हैं कि सफल होने का एक मात्र यही रास्ता था जो अब बंद हो गया है। ऐसे व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक वरदान स्वरूप है। उन्हें सही मार्ग दिखानें के ऐसे कई उपाय अंकित हैं, जो युवा अपने लक्ष्य से भटक गयें है या असफलता से निराश होकर गलत कार्यों को अपना लिए हैं ऐसे व्यक्ति एक बार इस पुस्तक का अध्ययन करें। मेरा पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक उनके लिए वरदान स्वरूप सि़द्ध होगी यह कथा पूर्णतः सत्य है कि हर बात मे सफलता पा लेना किसी के लिए भी संभव नहीं है। हर समय अच्छा नही होता है। असफलताओं से भी सीख मिलती है। व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक एंव नाकारात्मक दोनों पक्ष आतें हैं। उसे हमे सहज भाव से स्वीकार करते हुए गतिशील रहना चाहिए । जिस प्रकार अंधकार कों काटने के लिए कई रास्ते निकाल लेतें हैं उसी तरह व्यक्ति असफलताओं सें सफलता प्राप्त करने के कई रास्ते निकाल सकतें हैं।

डॉ. महरोत्रा जी की रचना अतीत के पौराणिक ऐतिहासिक रचनाओं पर आधारित नही है। वें समाज में हो रही बुराईयों और भ्रष्ठाचार से मुक्त करने एवं लोगों के प्रति सहानुभूति की भावना जागृत करती हैं। निंबध संग्रह से पाठकों मे अतिरिक्त शक्ति की और नये–नये विचारो का सृजन कराती है। डॉ. महरोत्रा जी के इस रचना के माध्यम से समाज मे सामाजिक चेतना नवीन पथ और व्यक्ति को उचित मार्ग दर्शन के साथ–साथ प्रेरणा उत्साह एंव सहयोग की भावना जागृत करने का सफलतम प्रयास है । पाठकों को सामाजिक परिस्थितियॉ मानवीय चेतनाओं एंव जीवन के अनुभवों से उतार–चढ़ाव होते रहतें हैं। सामाजिक परिस्थितियॉ बदलती रहतीं हैं। संसार मे कई तरह के व्यक्ति होतें हैं। कई तरह की आलोचनाऍ होती है पर व्यक्ति को अपने सत् मार्ग से बिचलित नही होनी चाहिए, क्योकि सत्य परेशान हो सकता है, परन्तु पराजित नही। यह सुख की राहें पाठको को इसलिए आकर्षित करती है, कि उनके इस निबंध संग्रह मे समाज की सम्पन्नता–विपन्नता, विलास और संयम आशा–निराशा, सफलता–विफलता सभी परिस्थितियों का दृष्टांत एंव समाधान प्रस्तुत हैं। अक्सर व्यक्ति बाहरी दुनिया को देखता है और उसे जो आकृष्ट मुग्ध और चमत्कृत करती है वह उसी ओर खिचता हुआ चला जाता है, और उस वस्तु कों पाने के लिए आतुर हो जाता हैं। यही आतुरता दुख का कारण बनता है।

इस संग्रह का मूल्यांकन करने के लिए उसकी मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है। आज की मनुष्य जीवन की अनेक कुंठाओं का शिकार हैं। ''सुख की राहें'' मे इन सबका प्रभाव देखने को मिलता है। इसके साथ ही यह आदर्श जीवन से संबधित प्रायः सभी सवालो की जवाब प्रस्तुत है। इस निबंध संग्रह से पाठक को यह प्रेरणा मिलती हैं। आत्म विश्वास जागृत करनें अपने भीतर अदम्य विश्वास पैदा करने की अपनी क्षमता और सामर्थ्य को तौलकर उसी के अनुरूप अपने सामने का लक्ष्य निर्धारित रखने की प्रेरणा देती है। यह मानव जीवन और संसार हमे जिस रूप मे प्राप्त हुआ हैं। उसे उस रूप में स्वीकार करते हुए ज्यादा से ज्यादा बेहतर बनाने का निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। यह विपरीत

परिस्थितियों मे धैर्य रखने एंव कोई भी निर्णय लेने से पूर्व उस पर सम्यक रूप से विचार करना चाहिए और वर्तमान मे जीने का संकल्प करना चाहिए।

उन्होंनें अपनी रचनाओं में जीवन की समाज की सच्चाई को पिरोया हैं। इस संग्रह में स्वार्थ की विविधता क्या है? किस तरह समाज स्वार्थ की परिभाषा गढ़ता है? लेखक की दृष्टि में सभी लोग स्वार्थी है। उनका मानना है कि संसार मे निःस्वार्थ सेवा कुछ नही है। कई व्यक्ति या समाज सेवी यश, नाम, संतोष और प्रतिष्ठा पाने के लिए स्वार्थ की पुर्ति करता हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि इस संसार मे स्वार्थी तो सभी है लेकिन जो व्यक्ति अपने स्वार्थ के साथ–साथ दूसरे के स्वार्थ का भी ध्यान रखता है उसे लोग स्वार्थी नही कहतें । डॉ. महरोत्रा जी के निबंधों का शीर्षक पढ़ने से ही पाठक भली–भॉती परिचित हो जाता हैं कि इसका क्या अर्थ है, और वह आगे अध्ययन करने के लिए ललायित हो उठता है। इसके इस संग्रह मे जीवन के सभी पहलुओं एवं समाज मे घटित घटनाओं का दृष्टांत वर्णन प्रतीत होता है। साथ ही हर उन समस्याओं से निजात पाने का समाधान भी है। इस संसार मे नाना प्रकार के लोग हैं कोई बुराई करता है, कोई तारीफ करता है, कौन मित्र है और कौन शत्रु इस बात का परिचय कराती है। यह निबंध संग्रह व्यक्तिगत जीवन मे क्षुद्र, नीचता पूर्ण प्रेम, सहानुभूति हीनता , संवेदन हीनता, कपट पूर्ण जीवन, स्वार्थी एंव ढोगियों के लिए वरदान स्वरूप है, इसके अध्ययन मात्र से उन्हे अपने जीवन का मकसद और गलतियों का एहसास हो जाएगा और वे सत्य मार्ग का अनुसरण कर जीवन को नई दिशा देने के लिए प्रेरित हो उठेंगें। यह निबंध संग्रह नवीनतम पीढ़ी नग्न उस्तरे की धार की तरह प्रखर और ईमानदार है, जीवन और सृजन के बीच विद्यमान कपट, पाखण्ड, को दूर कर यथार्थवादी एकता मे विश्वास करती है। इसमे लोक कल्याण की भावना नीहित है। डॉ. महरोत्रा जी का मत है कि समाज मे हर व्यक्ति बुरा या अच्छा नही होता है। यह निबंध संग्रह आज की भटकती हुई दिशाहार मानव चेतना का उद्धारक है । लेखक का मानना है कि व्यक्ति को असफलताओं से घबराना नही चाहिए क्योंकि हर बात में सफलता पा लेना किसी भी व्यक्ति के लिए संभव नही है । निरंतर व्यक्ति को कर्मरत रहना चाहिए इसका आशय है कि व्यक्ति को असफलताओं को सहज भाव से स्वीकार करते हुए निरंतर गतिशील रहना चाहिए यदि व्यक्ति असफलताओं से निराश होकर जड़ हो जाए तो सफलता उसे कभी हाथ नहीं लगेगी इसलिए उसे कमर कसकर सफलता का प्रयास करना चाहिए जिस प्रकार हम अंधकार कों काटने के लिए कई रास्ते निकाल लेतें हैं उसी तरह व्यक्ति असफलताओं सें सफलता प्राप्त करने के कई रास्ते निकाल सकतें हैं। लेखक इस निबंध संग्रह के माध्यम से पाठक को असफलताओं से न घबराने एवं सफलता के लिए प्रयास करने की प्रेरणा देतें हैं ।

<u>जीवन में 'आवश्यक' बनाम 'अमूल्य'</u> & इस निबंध के माध्यम से लेखक पाठको को यह संदेश देते हैं कि जीवन अनमोल है, एक संघर्षमय है, लेकिन जीवन को जीने का अंदाज अपना –अपना है कि व्यक्ति अपना जीवन किस प्रकार निर्वहन करना चाहता है हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दिनोदिन व्यस्त होते जा रहें हैं , और यही व्यस्तताएँ यदि व्यवहार में हमे कुछ दे रहीं हैं तो उससे कहीं अधिक हमसे छीन रही है । हम खानें कमाने में इतने अधिक व्यस्त होते जा रहें हैं कि हमें जीवन के कोमल पक्षों और संबंधो के बारे में सोचने समझने की फुरसत ही नहीं हैं । जीवन में आवश्यक बनाम अमूल्य अंतर के उदाहरण से डॉ. महरोत्रा जी पाठक को सतर्क किये हैं ''सभी के पास दिन में नपे – तुले चौबीस घंटे होते है, पर कुछ लोग उन घंटो में ' अपने और पराए सब काम समय पर पूरे कर लेतें हैं । यही नही वे उतने ही समय का सही उपयोग करके आसमान की ऊचाइयॉ छू लेते हैं । दूसरी ओर अन्य लोगों को अपने और पराये कामों को पूरा करने के लिए चौबीस घंटो का समय बहुत कम पड़ता है । और वे सारी जिंदगी एक ही ढर्रे पर चलते रहतें हैं । ऐसे लोग भी व्यस्त तो बेहद रहतें हैं, लेकिन सिर्फ अपने में, अपने लिए । उन्हें दूसरों से कोई मतलब नहीं होता । उनकी आवश्यकतांए इतनी अधिक होती है कि वे उनसे कभी ऊपर नहीं उठ पाते ।"5

<u>अच्छों को ही आदर्श मानिए</u> - डॉ. महरोत्रा जी का मानना है कि ''कुछ लोग अपने किसी गलत को उचित ठहराने के लिए दूसरों के बारे में यह कहकर अपनी बात की पुष्टि करतें हैं कि वे भी तो ऐसा करतें हैं।''6 ऐसे आदमी को उनकी यह मनोवृत्ति अच्छाई की ओर बढ़ने से रोकती है। वह अपनी सुविधा और लाभ के लिए ऐरे–गैरे को अपना आदर्श बना लेतें हैं। कोई चोर है, तो चोर बन जाए या मूर्ख बन जाए।

दूसरे लोग गलत करतें हैं तो क्या अपने व्यक्तित्व और अंतरात्मा को हलके फुलके लोगों के हाथों सस्ते बेचना उचित ? जैसे–किसी की किताब न लौटाना, बिजली–नल को खुले छोड़ देना. बिना टिकट की यात्रा करना, माता–पिता से दरुव्यवहार करना आदि। यदि हमें बिकना ही है तो हम जीवन के स्थायी मूल्यों पर क्यों न बिकें ? जीवन की व्यस्तता में आदर्श व्यक्ति को खोजना होगा। इस धरती में महात्माओं से भरी पड़ी है गलत काम को उचित ठहराने के लिए सफाई नही दी और न ही जिंदगी जीने के लिए किसी अन्य के कंधों का सहारा लिया है। अच्छाई की ओर कदम बढ़ाने के लिए कोई भी समय विलंब का नही होता ।

इसके बाद भी छोटी–छोटी इच्छाएं पूरी नही होने पर भी क्यो रोना रोते। डॉ. महरोत्रा जी से उदाहरणों के माध्यम से कहते है कि ''यदि हम नैसर्गिक रूप से उस बात को नियति मान लें कि इतनी भीड़ में हमारी बहुत सी इच्छाएं कभी पूरी नही हो सकेंगीं तो हमारा बहुत सा रोना–धोना बंद हो जाएगा ।''7

उपयोगितावादी दर्शन यह है कि हम इच्छाएं कम से कम रखें, अपनी इच्छाओं का त्याग करना सीखें। जीवन को सुखी बनाने का यह एक मंत्र है। यदि मन पर नियंत्रण करना सीख जाएं तो अपूर्ण इच्छाओं के प्रति हमारी सारी शिकायतें दूर हो जाएं। इसीलिए कहा गया है ''इच्छाओं को ही हमारा गुलाम होना चाहिए, न कि हमें इच्छाओं का गुलाम होना चाहिए''।

आदमी बेहद कम जरूरते रखकर भी इतिहास का बड़े से बड़ा आदमी ज्ञानी संत, महात्मा, पुण्यात्मा बनता आया है। पति–पत्नि को एक–दूसरे की हर बात पंसद हो और दोनो की सब बातें एक सी पसंदवाली हो। फिर भी दोनो एक साथ रहकर सुखी रह सकतें हैं। पति–पत्नि की कुछ पूर्णतः निजी इच्छाओं का ध्यान रखता है और पति–पत्नि की दोनो उन इच्छाओं को अपने–अपने स्तरों पर एक–दूसरे के लिए मन मढ़ाकर पूरा कर सकतें हैं। यह मन मारना–अपनी इच्छाओं का दमन और त्याग करना है।

निष्कर्ष:

अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि सुख से जीने के लिए जरूरी है कि दूसरे के लिए भी जियो। अच्छे स्वास्थ्य और अच्छे जीवनयापन की दृष्टि से त्याग जरूरी है । डॉ. महरोत्रा के साहित्य में नवीन विचारधारा, नव्यता की प्रचण्ड प्रवाह, जीवन को सही मार्गदर्शन दिखाने वाले प्रेरणा स्रोत रचनाएँ पाठकों को अपने आप ही आकर्षित करती है । डॉ. महरोत्रा ने साहित्य में जिन विषयवस्तु का चयन किया है वे मानवीय मूल्यों सामाजिक, परिवारिक परिस्थितियों के आधार पर, शैक्षणिक आवश्यकताओं के अनुरूप भाषा को मानक रूप में सशक्त करने के आधार पर आधारित है ।

व्यक्ति अपनी प्रतिभा को दिखाने के लिए जिस क्षेत्र का चयन करता हैं । उसका लिया गया निर्णय और झुकाव तो होता ही हैं, साथ ही ऐसी परिस्थितियां व्यक्तित्व और मनः स्थितियां उसे मिलती हैं जो अनायास ही उस ओर प्रवृत्त कर देती है । उसे ऐसा माहौल, व्यक्तित्व और समाज मिलता है जो प्रेरणा स्रोत की संज्ञा देता है ।

डॉ. महरोत्रा के रचनात्मक लेखन की पृष्ठभूमि में भी ऐसे तत्व है जिन्होंने उनके आंतरिक शक्तियों को पहचानकर रचनात्मक लेखन का बीज चयन किया, उसे अंकुरित वर्धित पल्लवित और पुष्पित किया । इनकी रचनाओं मे आपको अच्छाई की तरफ ले जाने वाले दर्जनों रास्ते पढ़ने को मिलते हैं । इन पर चलने और कितनी दूर चलने का निर्णय आपको स्वयं करना है । डॉ. महरोत्रा का अटूट विश्वास है कि इन रास्तों पर निरंतर चलने वाले लोग ही मानवता के खंडहर नहीं होने दे रहें हैं । इनकी रचनाओं में आपको आदर्श जीवन से संबंधित प्रायः सभी सवालों का जवाब मिल जाना चाहिए । हिन्दी भाषा के मानक प्रयोग से लेकर एक मानक जीवन जीने की प्रेरणा देने वाला उनका लेखन समादर के योग्य है । डॉ. महरोत्रा की प्रकाशित पुस्तकें व्यक्ति एवं समाज के लिए निहायत तो है ही भाव और विचारों के क्षेत्र में भी उनकी गहरी पैठ है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. महरोत्रा, रमेशचंद्र, आड़ी–टेड़ी बात, नई दिल्ली विद्या विहार 2003, पृष्ठ 124
2. वही, पृष्ठ 126–127
3. महरोत्रा, रमेशचंद्र, सफलता का रहस्य, नई दिल्ली प्रभात पेपरबैक्स, संस्करण 2013, पृष्ठ 24–25
4. महरोत्रा, रमेशचंद्र, सुख की राहें, दिल्ली ज्ञान गंगा, संस्करण प्रथम 2000, पृष्ठ 20
5. वही, पृष्ठ 49
6. वही, पृष्ठ 118
7. वही, पृष्ठ 118
8. महरोत्रा, रमेशचंद्र, अपने 67 वें जन्मदिन पर मैं और मेरे लिए छह फुट ज़मीन, रायपुर शोध एवं अनुसंधान विकास केंद्र,
9. दैनिक भास्कर, रायपुर
10. www.audioboom .com